12

पुस्तक समीक्षा— शिक्षा और समाज

प्रिया जौहरी*

शिक्षा और समाज गोविंद प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण किताब है जो शिक्षा और समाज के बीच के संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं।

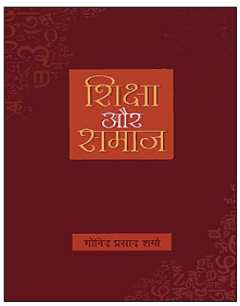

गोविंद प्रसाद शर्मा

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा संपादित

प्रकाशन वर्ष— 2022

पृष्ठ संख्या— 147

मूल्य— 210

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि शिक्षा और समाज कैसे एक-दूसरे पर आत्मनिर्भर हैं। यह पुस्तक शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुए समाज के साथ उसके संबंधों का तत्वसंधान करने का सफल प्रयास करती है। जैसा हम सब जानते हैं कि शिक्षा का समाज से गहरा संबंध होता है। शिक्षा ही, समाज के विकास का आधार प्रस्तुत करती है। जब-जब समाज में सामाजिक परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव शैक्षिक जगत पर भी पड़ता है। उसी प्रकार, जब शैक्षिक व्यवस्था में बदलाव होता है तो उसका असर भी सामाजिक संरचना पर परिलक्षित होता है। इस प्रकार शिक्षा और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं। इस पुस्तक के संग्रहित लेखों में शिक्षा एवं समाज से संबंधित प्रश्नों पर विचार किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में कुल 24 लेख समाहित हैं जो प्राचीन भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा में गुणवत्ता, लोक संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, शोध, बाल साहित्य, विवेकानंद के शैक्षिक विचारों और क्रांतिकारी आंदोलन जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और चिंतन का नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

**कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता,* अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

पुस्तक के पहले लेख का शीर्षक 'प्राचीन भारतीय शिक्षा का स्वरूप' है। इस लेख में लेखक ने प्राचीन भारतीय शिक्षा के स्वरूप का वर्णन करने के साथ-साथ पाश्चात्य शैक्षिक चिंतन का संक्षिप्त विवरण, ग्रीक विचारकों के विचार के साथ प्रस्तुत किया है। इस लेख के माध्यम से यह बताने की कोशिश की गई है कि शिक्षा अपने समय के प्रचलित विचारों से प्रभावित होती है। लेख में प्रकृतिवादी तथा प्रयोजनवादी दर्शन के शैक्षिक निहितार्थों का भी ज़िक्र किया गया है। लेखक के मतानुसार शिक्षा पर इन सभी पाश्चात्य दर्शनों का प्रभाव पड़ा। फिर भी, पाश्चात्य शैक्षिक चिंतन की सबसे बड़ी कमी उसमें वैश्विक एकता का अभाव होना हैं। भारतीय शैक्षिक चिंतन, भारतीय दार्शनिक चिंतन से अनुप्राणित है जो मूलतः आध्यात्मिक और वैश्विक एकता की भावना से ओत-प्रोत है, परंतु आज भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा संकट मूल्यों का है। प्राचीन भारतीय शिक्षा मूल्यपरक थी। वर्तमान समय में शिक्षा व्यक्तिगत होती जा रही है। वह विद्यार्थियों में सामाजिक दृष्टि एवं सोच और समाज के प्रति कर्तव्यों को विकसित नहीं कर पा रही है। यह आज की शिक्षा का अधूरापन है। भारतीय शिक्षा के मूल तत्व आज भी प्रासंगिक हैं, अत: उसे आधार मानते हुए भारतीय शिक्षा के शैक्षिक प्रतिमान विकसित किए जाने चाहिए।

पुस्तक के दूसरे लेख का शीर्षक 'अंग्रेज़ी शासन काल में पाठ्य-पुस्तकों से भारतीय ज्ञान परंपरा के लोप कारण व परिणाम' है। इस लेख में भारतीय ज्ञान परंपरा की विशालता और समृद्धता का वर्णन किया गया है। लेखक की मान्यता के अनुसार प्रारंभिक काल में शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाए जाने वाले विषयों को लेकर अंग्रेजों को विशेष रुचि नहीं थी। अंग्रेजों की पहली रुचि 1792 में चार्ल्स के प्रस्ताव से आरंभ हुई। इस प्रस्ताव में कई सुझाव प्रस्तुत किए गए थे जिनमें सबसे प्रमुख था कि भारत में पाश्चात्य शिक्षा को लागू करना। आगे चलकर, 1834 के मैकाले का शिक्षा संबंधी अभिमत इस दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाठ्यपुस्तक और पाठ्यक्रम से भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय भाषाओं को अलग करने का जो सुनियोजित प्रयास 1792 में चार्ल्स ग्रांट ने प्रारंभ किया, उसने 1834 में अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लिया जिससे पाठ्य-पुस्तकों से भारतीय ज्ञान परंपरा का तिरोधान आरंभ हो गया।

पुस्तक का तीसरा और चौथा लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दिशा और दशा' से संबंधित है। इसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कुछ प्रमुख आधारों का वर्णन संक्षिप्त रूप में किया गया है। लेखक के विचार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आकांक्षाओं को पूरा करने वाली है, जिसका वज़न बहुत ही स्पष्ट है। यह प्राचीन तथा सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में तैयार की गई है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर ज़ोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्कूली शिक्षा में जो आधुनिक सुधार सुझाए गए हैं वो स्कूली शिक्षा का पूरा ढाँचा और परिदृश्य बदल सकते हैं। लेखक के विचार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

पुस्तक के पाँचवें लेख का शीर्षक 'शिक्षा की गुणवत्ता' है। इस लेख के अनुसार ज्ञान आधारित समाज का निर्माण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से संभव है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वह है जो ज्ञान समाज के निर्माण में सहायक हो, साथ ही मनुष्य के ज्ञान को समाज परख बनाने के लिए उपयोगी हो। लेखक के मतानुसार, गुणवत्ता की दृष्टि से अभी भारतीय उच्च शिक्षा में बहुत कुछ किया जाना शेष है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शैक्षिक गुणवत्ता पर हम खंडों में विचार न करें। हमें एकीकृत और समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा। शिक्षा में गुणवत्ता परंपरागत तरीकों और रूढ़िगत सोच से नहीं आ सकती, इसलिए हमें नवाचारों को प्रोत्साहित किया जाए।

पुस्तक के छठवें लेख का शीर्षक 'शिक्षक शिक्षा' है। इस लेख के अनुसार शिक्षक शिक्षा की धुरी और शिक्षा प्रणाली का आधार है। लेखक के विचार से शिक्षक, भविष्य में समाज के स्वरूप के निर्धारक हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक की योग्यता, ज्ञान और उसका कौशल महत्व रखता है। शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक सुधार में रा.शै.अ.प्र.प., सी.आई.ई.टी. और जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है, इसीलिए इन संस्थाओं को प्रभावी बनाने की आवश्यकता हैं। शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यक्रमों में ज्ञान, दक्षता और अभिरुचि का समावेश अपेक्षित है। पाठ्यक्रमों का निर्धारण वर्तमान की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

पुस्तक के सातवें लेख का शीर्षक 'मातृभाषा' है। इस लेख में लेखक ने मातृभाषा से संबंधित अपने विचारों को प्रकट किया है। लेखक के विचार में आज मातृभाषा पर गंभीर संकट है। आज भारत में विद्यार्थियों की विडंबना यह है कि उनकी चिंतन प्रक्रिया मातृभाषा में है और पढ़ना-लिखना अंग्रेज़ी में है। यह स्थिति उन्हे मानसिक दबाव की ओर ले जाती है। जिससे उनमें स्वयं विचार करने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती है। भाषा का प्रश्न केवल माध्यम तक सीमित नहीं है, अपितु वह हमारी चेतना के विकास का साधन भी है। जब भी शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के अलावा अन्य भाषा को प्रयुक्त करते है तब हम बहुत बड़े सांस्कृतिक संकट को आमंत्रित करते हैं। लेखक ने तर्कों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण को सुलभ बनाया जा सकता है। इससे बालक का भावनात्मक संबंध शिक्षण से जुड़ता है। हमें यह समझना होगा कि अंग्रेज़ी का प्रयोग ऐसी परिस्थितियों को विकसित कर रहा है जिससे देश में बहुत-सी भाषाएँ समाप्त हो रही हैं। इस लेख में विश्व के कई देशों में मातृभाषा के लिए किए गए संघर्ष के उदाहरणों का संक्षिप्त रूप में ज़िक्र किया गया है। लेखक के मतानुसार. मातृभाषा का सम्मान किया जाना और उसके संवर्धन के लिए प्रयास किया जाना आवश्यक है। लेखक का सुझाव है कि प्राथमिक स्तर के शिक्षण के लिए मातृभाषाओं का प्रयोग किया जाए।

पुस्तक के आठवें लेख का शीर्षक 'विवेकानंद के शैक्षिक विचार' है। इस लेख में विवेकानंद के शैक्षिक संकल्पना का वर्णन किया गया है। लेखक के विचारों में वर्तमान स्थिति शैक्षिक स्थिति में उनके विचारों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है। जब संपूर्ण विश्व में तनाव और संघर्ष की संभावना है तब उनके विचार

समन्वय की प्रेरणा दे सकते हैं। उनके विचारों में हम मानव जीवन की श्रेष्ठा को तलाश सकते हैं। आज शिक्षा जिन वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रही है, उन चुनौतियों का समाधान विवेकानंद के शैक्षिक विचारों में है। 21वीं सदी में विश्व शिक्षा का क्या स्वरूप हो? जैसे प्रश्नों का उत्तर विवेकानंद के दर्शन से प्राप्त करने की आवश्यकता है।

पुस्तक के नौवें लेख का शीर्षक 'उत्तर प्रौद्योगिकी काल और मूल्य शिक्षा' है। लेखक के विचार में मूल्य, मानवीय सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण है। पिछले 5 दशकों में हर स्तर पर सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक मूल्यों का क्षरण हुआ है जिससे हमारा समाज अधिक भौतिकतावादी हो गया हैं। जिस तरह से सामाजिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, वह आगे चलकर समूची सभ्यता को ध्वस्त कर सकता है। ऐसे सामाजिक परिदृश्य में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता बढ़ गई है। जब हम मूल्यों पर विचार करते हैं तो हमें शिक्षा के बारें में भी सोचना होगा, क्योंकि मूल्य और शिक्षा अलग-अलग नहीं है, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। मूल्य, शिक्षा के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं। इस आवश्यकता को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों के रूप में स्वीकारा गया हैं। लेखक के विचार में सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा सार्वभौमिक रूप से बुनियादी मूल्य है। यही वह पाँच मूल्य आधारशिला हैं जिन पर शिक्षा का कार्यक्रम तैयार किया जा सकता है। यह पाँच मूल्य शिक्षा के पाँच उद्देश्य— ज्ञान, कला, संतुलन, दृष्टि और पहचान से सीधे संबंधित हैं।

पुस्तक के दसवें लेख का शीर्षक 'शोध' है। इस लेख में अनुसंधान से संबंधित मुद्दे पर चर्चा की गई है। लेखक के अनुसार, भारतीय समाज सदैव शोधपरक रहा है। भारत के प्राचीन पारंपरिक ज्ञान को संकलित करने की दृष्टि से व्यापक शोध की आवश्यकता है। इसके लिए सामाजिक एकात्मकता विकसित करनी चाहिए। शोध नकारात्मक मुद्दों के स्थान पर सकारात्मक मुद्दों पर किया जाए। शोध के विकास में सरकार, उद्योग जगत और अन्य संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वीकार किया गया है कि वैश्विक स्तर पर शोध पर किए जाने वाले खर्च की दृष्टि से भारत बहुत पीछे है। हमें विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में शोध संस्कृति विकसित करनी होगी। शोध कार्य को करते समय भारतीय संकलन शब्दों को अनेक अंग्रेज़ी अनुवाद और अर्थ से मुक्त रखकर तथा उनके मूल अर्थ एवं भाव का उपयोग किया जाए।

पुस्तक का ग्यारहवाँ और बारहवाँ लेख 'हिंदी भाषा में ज्ञान विज्ञान और भाषाओं के विस्थापन' से संबंधित है। इन लेखों में लेखक ने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया है, जैसे— क्या हिंदी भाषा में ज्ञान-विज्ञान का सृजन हो रहा हैं? क्या हिंदी में कुछ विधाओं को छोड़कर उच्च स्तरीय शोध हो रहा है? आदि। आज हिंदी में संदर्भ ग्रंथों का अभाव है। उनकी संख्या बहुत न्यून है। यही स्थिति शोध पत्रिकाओं की भी है। हिंदी भाषा में शोध पत्रिकाओं की बहुत कमी है। प्रश्न यह है कि आज जो स्थिति निर्मित हुई है उन परिस्थितियों में क्या संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध हिंदी भाषा में हो सकेंगे? इसका उत्तर प्राप्त करना

आसान नहीं है। लेखक के अनुसार, विस्थापित व्यक्ति तो परिवेश में धीरे-धीरे अपना सामंजस्य स्थापित कर लेता है, लेकिन भाषाएँ धीरे-धीरे सूख जाती हैं। भाषा सहज परिवेश में विकसित होती है। विस्थापन ने सभी भाषाओं और उनकी रचनाधर्मिता को प्रभावित किया हैं। विस्थापन का सर्वाधिक प्रभाव हिंदी, पंजाबी, सिंधी तथा अन्य भाषाओं पर पड़ा है। वैश्वीकरण ने वर्तमान समय में भाषाओं की प्रकृति को प्रभावित किया है जिससे स्थिति अधिक कठिन हो गई है।

पुस्तक के तेरहवें लेख का शीर्षक 'बाल साहित्य' है। इस लेख में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बाल साहित्य की उपयोगिता की चर्चा की गई है। लेखक के विचार में बाल साहित्य के बिना साहित्य अधूरा है। बाल साहित्य बालकों के मानसिक विकास में सहायक होता है। वर्तमान में बाल साहित्य लोरियों, आख्यानों, गीतों तक सीमित नहीं है, अपितु कहानियों, नाटकों और उपन्यासों के रूप में भी उपलब्ध है। बाल साहित्य की विशेषता है, इसमें पशु-पक्षी बोलते और आपस में बात करते हैं जिससे बच्चे सीखते हैं। पहले का बाल साहित्य आदेशात्मक था, लेकिन आज के बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन, हास्य, व्यंग या मुहावरों आदि के द्वारा ज्ञानवर्धक जानकारियाँ और विज्ञान की बातें भी होती हैं। परंतु बाल साहित्य का लेखन चुनौतीपूर्ण है, समसामयिक बाल साहित्य लेखन के सम्मुख कई चुनौतियाँ हैं। तकनीकी और दूरसंचार माध्यमों के कारण आज कई प्रकार के दृश्य कार्यक्रम सहज ही उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों में साहित्य की अभिरुचि बनाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है।

पुस्तक के चौदहवें लेख का शीर्षक 'लोक संस्कृति' और पंद्रहवें लेख का शीर्षक 'भारत की सांस्कृतिक विरासत' हैं। लेखक के विचारों में लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति उसकी सामूहिक चेतना के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार में होती है। प्रागैतिहासिक काल से वर्तमान तक हमारी बौद्धिक और वैचारिक रूप से हमें जो भी प्राप्त हुआ है वह हमारी विरासत है जिस तेज़ी से तकनीकी का विकास हुआ है उसके प्रभाव के कारण जो सामाजिक रूपांतरण हुआ है जिसने लोक संस्कृति की लोकमानस पर पकड़ को कमज़ोर कर दिया है।

पुस्तक का सोलहवें लेख का शीर्षक 'महिला उत्थान में नारी आंदोलनों की भूमिका' हैं। लेखक के द्वारा दिए गए विचार महिला सशक्तीकरण और नारी आंदोलनों के महत्व को बड़े उजागरता से दर्शाते हैं। महिला सशक्तीकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जो विशेष रूप से भारत की महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के साथ जुड़ा है। लेखक के मतानुसार महिला सशक्तीकरण, नारी आंदोलनों का परिणाम है। नारी आंदोलन अपने मूल लक्ष्य को उस समय तक प्राप्त नहीं कर सकते जब तक महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच में अंतर नहीं आ जाए। इसके लिए हमें भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं के प्रति सोच और विचार को समझना होगा और उसे अपने व्यवहार में लाना होगा।

पुस्तक के सत्रहवें लेख का शीर्षक 'भारतीय जनजीवन के संदर्भ में कुंभ' है। इस लेख में भारतीय दैनिक जीवन के संदर्भ में कुंभ की चर्चा की गई है। कुंभ मेला, विश्व का सबसे प्राचीन और सबसे अधिक

दिनों तक चलने वाला मानव-समागम है। वास्तव में कुंभ भारत की सांस्कृतिक विराटता का प्रत्यक्ष भौतिक रूप है। अठारहवें लेख का शीर्षक 'ऋतुएँ' हैं। इस लेख में भारतीय जनजीवन के संदर्भ में ऋतुओं की चर्चा की गई है। सामान्य रूप से ऋतुएँ चार प्रकार की मानी गई हैं। ऋतुओं के माध्यम से प्रकृति के कई रूप हमें देखने को मिलते हैं। ऋतुओं के अनुसार हम उत्सव मनाते हैं। भारत एक विविध देश है, जिसमें अलग-अलग मौसम और वातावरण होते हैं। भारत में छः मुख्य ऋतुएँ होती हैं, जो भारतीय संस्कृति, कृषि, और जीवनशैली को प्रभावित करती हैं।

पुस्तक के उन्नीसवें लेख का शीर्षक 'मध्य प्रदेश में पाठ्यपुस्तकों का लेखन' और बीसवें लेख का शीर्षक 'पूर्वाग्रह में उलझ गए शांति और समरसता का पाठ' हैं। इन लेखों के अनुसार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुरूप विकसित पाठ्यपुस्तकों के मुख्य केंद्र बिंदु विश्व दृष्टि, संवैधानिक प्रतिबद्धता और शांति शिक्षा थे। लेखक के विचार में 2005 की रूपरेखा के अनुसार कई पुस्तकें लिखी गई फिर भी वह अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकीं। लेखक के विचार से पुस्तक लेखन कार्य एक जंतर है जो समाज में समरसता और एकता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

पुस्तक के इक्कीसवें लेख का शीर्षक 'पाठ्यपुस्तकों में बदलाव पूर्वाग्रह से मुक्त' हो हैं। लेखक के अनुसार, शिक्षा अपने मूल उद्देश्य से कट गई हैं, इसलिए पुस्तक लेखन का कार्य अधिक सावधानी और सतर्कता के साथ किए जाने की आवश्यकता हैं। पुस्तकों में बदलाव किए जाएँ जो पूर्वाग्रह से मुक्त हों पाठ्य-पुस्तकों में पर्यावरण संबंधी बातों का समावेश किया जाएँ जब भारतीय समाज और इतिहास को केंद्रित करके पाठ्य-पुस्तकों का लेखन किया जाएगा तभी पुस्तकों में भारतीय स्वरूप के प्रजातांत्रिक और शांति के मूल्य स्थापित होंगे

बाईसवें लेख का शीर्षक 'भारत के क्रांतिकारी आंदोलन' हैं। इस लेख में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत की आज़ादी में क्रांतिकारी आंदोलनों का अत्यधिक योगदान रहा है। इसी संदर्भ में पुस्तक के तेईसवें लेख जिसका शीर्षक 'गाँधी जी का योगदान' है, यह बताने का प्रयास करता है कि कैसे अहिंसा और सत्याग्रह के बल पर गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और इस स्वतंत्रता संग्राम को एक अद्वितीय और शांतिपूर्ण आंदोलन बना दिया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसा के माध्यम से आगे बढ़ाया और लोगों को यह सिखाया कि अहिंसा का आदर करना ही सच्ची स्वतंत्रता की कुंजी है। अपने विचारों और क्रियाओं के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम का पथ प्रदर्शन किया है। गाँधी जी के अनमोल विचारों ने सदैव ही भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सुधारों के लिए प्रेरित किया है।

पुस्तक के अंत के लेख का शीर्षक 'सुभाष चंद्र बोस के जीवन का मूल्यांकन भारतीय समुराई' के रूप में है। लेख नेताजी के जीवन और उनके आज़ादी के संग्राम ऐ जुड़ा हुआ है। लेखक के अनुसार, नेताजी की साहसी और समर्पित भावनाओं ने उन्हें एक समुराई

की तरह उभारा। लेखक ने नेताजी को भारतीय समुराई के रूप में देखा है जो साहस, नैतिकता और समर्पण के प्रतीक के रूप में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।

शैक्षिक निहितार्थ

यह पुस्तक शिक्षा के माध्यम से समाज में सुधार करने के लिए ज़रूरी सोच और दिशाएँ प्रस्तुत करती है और शिक्षा के महत्व को समझाने का प्रयास करती है। गोविंद प्रसाद शर्मा के द्वारा लिखी गई इस पुस्तक को शिक्षा और समाज के संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना जा सकता है। यह विचारशीलता को प्रोत्साहित करने वाली पठनीय पुस्तक है। यह पुस्तक शिक्षा और समाज के द्वंद्व को गहराई से छूने का प्रयास करती है। इस पुस्तक में विद्या के महत्व और इसके समाजिक प्रभाव को विचारशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक शिक्षा के माध्यम से समाज में सुधार के रास्ते पर रोशनी डालती है और शिक्षा के साथ जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों का विचार करती है। लेखक ने पुस्तक में समाज में शिक्षा के योगदान के साथ-साथ शिक्षा की सामाजिक संरचना पर भी ध्यान केंद्रित किया है। वे बताते हैं कि शिक्षा कैसे समाज का पुनरुत्थान कर सकती है और सामाजिक न्याय की दिशा में योगदान कर सकती है। अत: शिक्षा और समाज एक ऐसी पुस्तक है जो शिक्षा एवं समाज के बीच के संबंधों को गहराई से समझने का प्रयास करती है।

पुस्तक की भाषा

यह पुस्तक सरल और सहज भाषा में लिखी गई है जिससे पाठकों को सामग्री समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। लेखक ने अपने विचारों को इस तरीके से प्रस्तुत किया है जिससे पाठक आसानी से जुड़ सकते हैं। यह पुस्तक सामान्य भाषा में महत्वपूर्ण विचारों को साझा करने के लिए एक अच्छा उदाहरण है। पुस्तक की भाषा विचारों को सामग्री के माध्यम से समझाने में मदद करती है। शब्दों का चयन सुंदर और प्रभावशाली है जो पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है।

निष्कर्ष

शिक्षा और समाज के लिए आवश्यक सभी पक्षों को इस कृति में संग्रहित करने का सफल प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में लेखक ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मातृभाषा, शिक्षकों के कर्तव्य, शिक्षा की गुणवत्ता, बाल साहित्य, मध्य प्रदेश का पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, नारी आंदोलनों, भाषा जैसे प्रश्नों को शामिल किया है जिससे यह पुस्तक शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हो गई हैं। लेखक ने जगह-जगह पर आवश्यकतानुसार विभिन्न संदर्भों एवं उद्धरणों से अपने तथ्यों को सिद्ध करने का प्रयास किया है जो कृति की विश्वसनीयता को बढ़ाते हैं। यह पुस्तक प्राचीन और नवीन विचारधाराओं के बीच एक पुल का कार्य करती है। कुल मिलाकर यह पुस्तक भारतीय संदर्भों मे शिक्षा और समाज से जुड़े मुद्दों और बहसों को नवीन ढंग से प्रस्तुत करती है।

संदर्भ

शर्मा, गोविंद. 2022. *शिक्षा और समाज*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली.